शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (921-926) July - Sep. 2019

वाणिज्य पाठ्यक्रम की रोजगारोपयोगिता – वाणिज्य प्राध्यापकों के अभिमत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर से संबंद्ध महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. (श्रीमती) हेमा मिश्रा
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर
Email: hemamishrascmkvm@gmail.com.

सारांश

आज व्यवसाय की आवश्यकता ऐसे मानव संसाधनों की है जो तकनीकी तथा सैद्धांतिक शिक्षा से परिपूर्ण होने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के व्यवसायोपयोगी कौशलों से भी युक्त हों। अर्थात उद्योग एवं व्यवसाय जगत को "रेडी टु यूज" मानव संसाधनों की आवश्यकता है। वाणिज्य पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने का मूल उद्देश्य ही रोजगार हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना है। बदलते समय की एवं उद्योगों की आवश्यकता को देखते हुए इसमें बार–बार परिवर्तन किये गये हैं। फिर भी उसके वांछित परिणाम नजर नहीं आये। गत दस वर्षों में ही पाठ्यक्रम में बारंबार बदलाव किये गये। परंतु इसका अपेक्षित प्रभाव नजर नहीं आया। सभी प्रबुब्धजनों का मानना है कि हमारी वास्तविक समस्या बेरोजगारी की अपेक्षा पाठ्यक्रम की रोजगारहीनता है। वाणिज्य जिसके गर्भितार्थ में ही रोजगार छिपा हुआ है, उसी पाठ्यक्रम की रोजगारोपयोगिता पर आज प्रश्न चिन्ह लगा है। इस संबंध में वे लोग जो इस पाठ्यक्रम से नजदीक से जुडे हैं, पाठ्यक्रम की सफलता/असफलता पर जिनका भविष्य निर्भर है, अर्थात वाणिज्य के प्राध्यापकों का इस बारे में क्या मानना है, इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के अनुसार वाणिज्य पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी नहीं है ऐसा वाणिज्य के प्राध्यापकों का मानना है । इसका मुख्य कारण पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन नहीं है ।

मुख्य शब्द *– वाणिज्य संकाय, पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के विभिन्न घटक, नियोजनीय।*

प्रस्तावना

वर्तमान में शासन ने शिक्षा मे माध्यम से रोजगारोपयोगी कौशल विकास का बीड़ा उठाया है। हमारा देश अभी भी गरीबी, शिक्षित बेरोजगारी, आर्थिक–सामाजिक असमानता एवं अयोग्य कार्यकारी जनसंख्या के बढ़ता भार जैसी समस्याओं से ग्रस्त है। इन समस्याओं का एक मात्र हल रोजगारोपयोगी शिक्षा प्रदान करने में है। वाणिज्य शिक्षा में कौशल विकास के लिए अपार संभावना है। एक सुविचारित एवं सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम निश्चित ही रोजगारोपयोगी शिक्षा का उद्देश्य हासिल कर सकता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि वाणिज्य संकाय अपने मुख्य उद्देश्य से भटक गया है। वस्तुस्थिति यह है कि वाणिज्य शिक्षा प्राप्त छात्रों का स्तर उन्हें रोजगार दिलाने लायक ही नहीं है। इतना ही नहीं उनके पास स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने हेतु आवश्यक कुशलता एवं साहस भी नहीं है। इसलिये सर्वत्र 'बी.कॉम माने बेकाम' का नारा बुलंद हो रहा है। रोजगारोन्मुखिता समाप्त होने से जैसे वाणिज्य शिक्षा का अस्तित्व ही लुप्त होते जा रहा है। वाणिज्य के प्रत्येक घटक से रोजगार की सरिता स्वतः ही प्रवाहित होती है। अतः इसका स्नातक बेरोजगार होना ही नहीं चाहिये। परंतु विडंबना भी यही है कि वाणिज्य स्नातक आज बेरोजगारों की भीड़ में शामिल है तथा रोजगार के लिये दर–दर भटक रहा है। ऐसा नहीं है कि वाणिज्य स्नातकों के लिये रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। उद्योग, व्यापार, बैंक, बीमा, परिवहन, रेलवे एवं व्यापार सहायक अन्य सेवा क्षेत्र जैसे अनेक क्षेत्र हैं जहां इन्हें रोजगार मिल सकता है। परंतु वास्तविकता यह है कि केवल उपाधि के दम पर इन्हें कहीं भी रोजगार नहीं मिलता है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हमारा उत्पाद बाजार मांग के अनुसार नहीं है, इसलिये इसकी खपत नहीं है। अर्थात अर्थव्यवस्था की आवश्यकता एवं प्रदान की जाने वाली शिक्षा में अंतर है।

वाणिज्य पााठ्यक्रम को प्रारंभ करने का मूल उद्देश्य ही रोजगार हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना है। बदलते समय की एवं उद्योगों की आवश्यकता को देखते हुए इसमें बार–बार परिवर्तन किये गये हैं। फिर भी उसके वांछित परिणाम नजर नहीं आये। गत दस वर्षों में ही पाठ्यक्रम में बारंबार बदलाव किये गये। परंतु इसका अपेक्षित प्रभाव नजर नहीं आया। सभी प्रबुध्दजनों का मानना है कि हमारी वास्तविक समस्या बेरोजगारी की अपेक्षा पाठ्यक्रम की रोजगारहीनता है। वाणिज्य जिसके गर्भितार्थ में ही रोजगार छिपा हुआ है, उसी पाठ्यक्रम की रोजगारोपयोगिता पर आज प्रश्न चिन्ह लगा है। इस संबंध में वे लोग जो इस पाठ्यक्रम से नजदीक से जुड़े हैं, पाठ्यक्रम की सफलता/असफलता पर जिनका भविष्य निर्भर है, अर्थात वाणिज्य के प्राध्यापकों का इस बारे में क्या मानना है, इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वाणिज्य पाठ्यक्रम की रोजगारोपयोगिता के बारे में वाणिज्य प्राध्यापकों के अभिमत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन का महत्व इस प्रकार है–

- इस शोध अध्ययन से वाणिज्य शिक्षा में नये बदलाव करने की दिशा तय की जा सकेगी।
- इस शोधकार्य के आधार पर वाणिज्य संकाय को उद्योगोपयोगी बनाने में मदद मिलेगी।
- वाणिज्य स्नातकों की नियोजनीयता में वृद्धि हो सकेगी

अध्ययन की सीमाएं

यह शोध अध्ययन केवल वाणिज्य संकाय के प्राध्यापकों के अभिमत के आधार पर किया गया है। यह अध्ययन देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर क्षेत्र तक सीमित है। यह अध्ययन वाणिज्य पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने अथवा न होने के कारणों पर प्राध्यापकों की प्रतिक्रिया के अध्ययन तक सीमित है।

परिकल्पना–वाणिज्य पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी नहीं है।

इस परिकल्पना के परिक्षण के आधारभूत घटक है –(1) वाणिज्य पाठ्यक्रम व्यवसाय की मांग के अनुसार होना। (2) वाणिज्य पाठ्यक्रम में कौशल विकास कार्यक्रम शामिल होना। (3) पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन होना।

अध्ययन विधि –

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्नानुसार शोध विधि का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों के संकलन हेतु न्यादर्श का आकार 150 है। न्यादर्श का चयन इंदौर के वाणिज्य संकाय के महाविद्यालयों में से किया गया है। न्यादर्श के चयन की पद्धति सविचार न्यादर्श पद्धति है। समंकों का संकलन प्रश्नावली विधि से किया गया है। प्राध्यापकों से प्राप्त जानकारी के मुख्यतः दो आधार है – पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के कारण तथा पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी न होने के कारण। समंकों की प्रस्तुती टेबल के माध्यम से की गई है। इस प्रकार प्राप्त समंकों का विश्लेषण करके निष्कर्ष ज्ञात किये गये हैं।

वाणिज्य पाठ्यक्रम के बारे में प्राध्यापकों से उसके रोजगारोपयोगी होने अथवा न होने के कारण जानने का प्रयास किया गया था। इससे संबंधित प्राप्त जानकारी निम्नानुसार हैः–

पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने अथवा न होने के संबंध में प्राध्यापकों का अभिमत

तालिका क्रमांक 1

अभिमत	महिला	पुरुश
पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी है	15	11
पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी नहीं है	63	61
कुल	78	72

वाणिज्य पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने अथवा न होने के बारे में 150 में से 124 यानी 83 प्रतिशत प्राध्यापकों का मानना है कि वर्तमान पाठ्यक्रम छात्रों को रोजगार प्रदान करने में सक्षम नहीं है। महिलाओं में से 81 प्रतिशत प्राध्यापकों का यही मानना हैं तथा 84 प्रतिशत पुरुष प्राध्यापकों का भी मानना है कि पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी नहीं है। शेष 19 प्रतिशत महिलाएं तथा 16 प्रतिशत पुरुषों का मानना है कि वर्तमान पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी है।

- **पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के कारण**

पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के बारे में प्राध्यापकों ने विभिन्न कारण बताये हैं।

उन सभी कारणों की विधिवत जानकारी इस प्रकार है–

पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के कारण

तालिका क्रमांक 2

कारण	महिला	पुरुष
पाठ्यक्रम का व्यवसाय की मांग के अनुसार होना	02	02
पाठ्यक्रम में कौषल विकास कार्यक्रम शामिल होना	06	04
पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन होना	02	02
सभी	05	03
कुल	**15**	**11**

पाठ्यक्रम के रोजगारोन्मुखी होने के पक्ष मे अभिमत देने वाले प्राध्यापकों में से उद्योग जगत की मांग के अनुसार प्राठ्यक्रम गठित किया गया है, ऐसी मान्यता केवल 15 प्रतिशत प्राध्यापकों की है। 38 प्रतिशत प्राध्यापकों के अनुसार वर्तमान पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में रोजगारोपयोगी आवश्यक कौशल विकसित होता है। इसलिये यह पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी है। इसमें 40 प्रतिशत महिला तथा 36 प्रतिशत पुरुष प्राध्यापक शामिल है। पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन के संबंध में 15 में से 6 महिला तथा 11 में से मात्र 2 प्राध्यपक इसके पक्ष में है। बहुत कम प्राध्यापकों का मानना है कि वर्तमान पाठ्यक्रम कौशल विकास, व्यवसाय की मांग तथा सार्थक परिवर्तन से युक्त है, इसलिये यह रोजगारोपयोगी है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी होने के पक्ष में बहुत कम प्राध्यापक है।

- **पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी न होने के कारण**

आज समाज में वाणिज्य पाठ्यक्रम के प्रति आम धारणा है कि बी.कॉम. तथा एम.कॉम. करने से नौकरी नहीं मिलती। यह कोर्स बेकार है। केवल नाम के लिये डिग्री प्राप्त करना हो तो इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहिये। समाज में प्रचलित इन धारणाओं में कहीं न कहीं शिक्षक होने के नाते तथा पालक होने के नाते हम शामिल हैं। इस बारे में केवल शिक्षक की भूमिका में रह कर प्राध्यापक क्या सोचतें हैं? क्या वें भी आम धारणा में शामिल हैं? अथवा शिक्षकों की कुछ अलग सोच है? इस बारे मे प्राप्त जानकारी का विश्लेषण इस प्रकार है–

पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी न होने के कारण

तालिका क्रमांक 3

कारण	महिला	पुरुष
पाठ्यक्रम का व्यवसाय की मांग के अनुसार नहीं होना	25	20
पाठ्यक्रम में कौषल विकास कार्यक्रम शामिल नहीं होना	23	20
पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन नहीं होना	05	15
सभी	10	06
कुल	**63**	**61**

पाठ्यक्रम की उपयोगिता तथा रोजगारोन्मुखिता के कारक तत्व है, उसकी परिवर्तनशीलता, कौशल विकास तथा बाजार मांग। अतः इन्हीं मुद्दों पर प्राध्यापकों से जानकारी एकत्रित की गई थी। तदनुसार कुल प्राध्यापकों में से 25 महिला तथा 20 पुरुष प्राध्यापकों का कथन है कि पाठ्यक्रम उद्योग जगत की आवश्यकता के अनुसार नहीं है। 63 में से 23 महिला एवं 61 में से 20 पुरुष प्राध्यापकों का मानना है कि वर्तमान पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी इसलिये नही है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों का रोजगारोपयोगी कौशल विकसित नहीं होता है। वाणिज्य पाठ्यक्रम में सार्थक परिवर्तन नहीं है ऐसा 5 महिला एवं 15 पुरुष प्राध्यापकों का मानना है। इसी प्रकार 10 महिला तथा 06 पुरुष प्राध्यापक मानते हैं कि वर्तमान पाठ्यक्रम रोजगारोपयोगी होने की कोई भी शर्त पूरी नहीं करता है। इसलिये रोजगार हेतु इसकी उपयोगिता शून्य है।

वाणिज्य पाठ्यक्रम के रोजगारोपयोगी न होने के कारणों में से सबसे महत्वपूर्ण कारण व्यवसाय की मांग के अनुसार पाठ्यक्रम का न होना है। इसलिये वाणिज्य संकाय का विद्यार्थि बेरोजगार है। इस प्रकार समाज की सोच के अनुसार हमारे वाणिज्य के प्राध्यापकों की भी यही सोच है कि वर्तमान वाणिज्य पाठ्यक्रम वाणिज्य स्नातकों को रोजगार हेतु तैयार करने में सक्षम नहीं है।

परिकल्पना परिक्षण का प्रथम आधार था वाणिज्य पाठ्यक्रम वाणिज्य पाठ्यक्रम व्यवसाय की मांग के अनुसार है अथवा नही है। इसके बारे में 49% प्राध्यापकों के अनुसार वर्तमान पाठ्यक्रम के माध्यम से व्यवसायोपगी मानव संसाधन प्राप्त नहीं हो रहे है। वाणिज्य पाठ्यक्रम में कौशल विकास कार्यक्रम शामिल होने संबंध में 48% प्राध्यापकों के अनुसार वाणिज्य पाठ्यक्रम में कौशल विकास कार्यक्रम पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। इन 48% प्राध्यपकों का यह भी मानना है कि कौशल विकास के प्रशिक्षण कार्यक्रम अलग से संचालित करने पर विद्यार्थियों की उपस्थिति नगण्य होती है क्योंकि इन कार्यक्रमों का परीक्षा के अंको से कोई संबंध नहीं है। इसी प्रकार कुल 29% प्राध्यापकों के अनुसार वाणिज्य पाठ्यक्रम में आज तक सार्थक परिवर्तन नही हुआ है, इसलिये यह रोजगारोपयोगी नहीं है। इस प्रकार कुल 83% प्राध्यापकों के अनुसार हमारा उत्पाद बाजार मांग के अनुसार नहीं है। अतः हमारी परिकल्पना सही सिद्ध हो गई है।

वाणिज्य शिक्षा के उद्देश्यों को केवल और केवल प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर ही प्राप्त किया जा सकता है। हम इस सत्य को नकार नही सकते कि वाणिज्य शिक्षा के स्नातकों को व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान नहीं है। उन्हे न तो अकाउंटीग का सॉफ्टवेयर चलाने आता है और न ही जीएसटी का फार्म भरने का ज्ञान है। अर्थशास्त्र विषय पढने के बाद भी देश के आर्थिक व्यवस्था की जानकारी नहीं है। वाणिज्य स्नातकों को बजट का अध्ययन/विश्लेषण करते नहीं आता है। व्यावहारीक ज्ञान के अभाव में बैंक/बीमा जैसी संस्थाओं में भी इंजिनियर एवं विज्ञान पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त होता है। इस प्रकार वाणिज्य शिक्षा में बहुआयामीता एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने की संभावना होने के बावजूद रोजगार प्रदान करने में अक्षम होने कारण इसका अस्तित्व खतरे में है।

References

(1) A report by National Skill Development Corporation- Study on mapping of human resource skill gaps in India till 2022- Human resource and skill requirements in the education and skill development services Sector

(2) Anup Kumar Singh – *Mentoring for student success and employability*- University News Page No. **14-20,** Vol. No. 11(51), March 2013, ISSN 0566-2257

(3) D.A. Ghanchi – India's higher education- How it can build up the nation's soft power. University News Page No. **4-6,** Vol. No. 33(50), August 2012, ISSN 0566-2257

(4) Dr. Partap Singh, Sangeeta Rani, Dr. Sanjay Singla, Dr. Priti Singla- *Role of Commerce Education in Inclusive Growth of India*, International Journal of Latest Trends in Engineering and Technology (IJLTET), Vol. 6 Issue 1 September 2015 311 ISSN: 2278- 621X, Page No- **311-320**

(5) Dr. Sucheta Y. Naik- Revitalizing Commerce Education in India – Vidyavarta, MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318, Oct. TO Dec. 2014, Issue-08, Vol-01, Page No – **48-51**

(6) Dr. Rohit Bansal- *Challenges and future trends in commerce education in India,* International Journal of Techno-Management Research, Vol. 05, Issue 03, December 2017 ISSN: 2321-3744 Page No. **15-25**

(7) Dr. Syamala G, 2 Ramajan varunkar- A study about views of students on challenges in commerce education, International Journal of Commerce and Management Research ISSN: 2455-1627, Impact Factor: RJIF 5.22, www.managejournal.com, Volume 2; Issue 5; May 2016; Page No. **21-23**

(8) Payal Bhatia - Problems Of Teachers And Students In Organization Of Commerce Subject- International Journal of Research in Advance Engineering, (IJRAE) Vol. 2, Issue 2, Mar-Apr-2016, Available at: www.knowledgecuddle.com/index.php/IJRAE- Page No **1-6**

(9) Ram Chandra Das - *Skill development and commerce education* -EPRA International Journal of Economic and Business Review Volume - 5, Issue- 7, July 2017, IC Value: 56.46 e-ISSN: 2347 - 9671| p- ISSN: 2349 – 0187 UGC-Approved Journal No: 47335, Page No-**151-155**